International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 730-731

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 730-731
www.allresearchjournal.com
Received: 14-08-2020
Accepted: 18-09-2020

प्रमोद कुमार सिंह
मैथिली विभाग, ति0 मा0 भागलपुर विश्व0, भागलपुर, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
प्रमोद कुमार सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ल०ना०मि० विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

आधुनिक मैथिली रंगमंचक प्रवृत्ति

प्रमोद कुमार सिंह

प्रस्तावना:
रंगमंच (थिएटर) एहन जगह अथवा स्थान अछि जाहि ठाम नृत्य, नाटक, खेल आदि होइत अछि। रंगमंच शब्द 'रंग' एवं 'मंच' दु शब्दक मेलसँ बनल अछि। 'रंग' दृश्यक आकर्षक बनेबाक लेल दीवार, छत आ पर्दापर विविध प्रकारक चित्रकारी कयल जाइत अछि आओर अभिनेताक वेशभूषा तथा सज्जामे सेहो विविध रंगक प्रयोग होइत अछि। दोसर 'मंच' शब्दक अर्थ दर्शकक सुविधाक लेल रंगमंचक तलसँ किछु उपर रहैत अछि। दर्शकक बैठेक स्थानक प्रेक्षागार आ रंगमच सहित समूचे भवनक प्रेक्षागृह, रंगशाला या नाट्यशाला कहल जाइत अछि। पश्चिमी देशमे एकरा थिएटर या ऑपेराक नामसँ जानल जाइत अछि। दुनिया भरिमे 'विश्व रंगमच दिवस' 27 मार्चक मनाइल जाइत अछि।

रंगमंच मनुष्यक सनातन प्रवृत्ति थिक। नाटक ओ रंगशालाक आख्याने रंगमंचक आख्यान थिक। नाटक एक दृश्य–काव्य थिक तँ ओ दृश्यत्वक सार्थकता ग्रहण करैछ– रंगमंचपर। रंगमंच नाटकक भौतिक स्वरूप थिक। रंगमंचीय क्रियाक उद्‌भव मानव चेतनाक संगहि भेल तँ एकरा एक चेतन कलाक संज्ञा देल गेलैक जाहिपर जीवनक जीवन्त रूप प्रदर्शित होइछ। रंगमंच शब्दक उल्लेख भरतक 'नाट्यशास्त्र' अथवा परवर्ती लक्ष्ण ग्रंथमे नहि भेटैछ। नाट्याचार्य भरत रंगमंच शब्दक स्थानपर रंगपीठ एवं रंगशीर्ष शब्दक प्रयोग कयने छथि।[1]

रंगमंच नाट्यकारक हेतु ओ शक्ति थिक जाहि माध्यमे नाटक अपन मूर्त्त एवं जीवन्त रूप धारण करैछ। एहि अर्थमे रंगमंचक प्रत्येक प्रवृति वर्तमान रहैछ। एहि अर्थमे रंगमंच नाट्यकारक हेतु ओतबे आवश्यक अछि जतेक चित्रकारक हेतु रंग एवं रेखा। वस्तुतः नाट्य–लेखन, अभिनय, निर्देशन इत्यादि पृथक–पृथक कला नहि प्रत्युत् नाट्य वा रंगमंच कलाक अंग मात्र थिक।

कोनो नाटककेँ मंच धरि पहँचयबाक श्रेय नाट्यशास्त्र पश्चात ओकर परिचालक दृश्य–सज्जाकार, रूप–सज्जाकार, प्रकाश–संयोजक, चित्रकार एवं अभिनेता इत्यादिकेँ देल जाइछ। यद्यपि प्रत्येकक अस्तित्व टेकनीक पृथक–पृथक होइछ किन्तु सभक लक्ष्य प्रत्यक्ष होइछ। नाटककेँ एक सम्पूर्ण कलाक दर्जा देबाक हेतु अनेक कला, उपकला, प्रवृत्तिक सहज स्वकृति आ अन्विति आवश्यक अछि। निष्कर्षतः नाट्यकार, परिचालक, अभिकल्पक, दृश्य–संयोजन, आलोक–संपात, ध्वनि–संयोजन, रूप–सज्जा एवं भेश–भूषा इत्यादि रंगमंचीय प्रवृत्तिक साधक होइछ। गार्डेने क्रेगक शब्दमे– "दृश्य, ने नृत्य, प्रत्युत ओहि सब तत्वक समन्वय थिक जे ओहिसँ निर्मित होइछ।"[2]

पाश्चात्य देशमे विकसित टेक्नोलॉजीक फलस्वरूप अनेक प्रकारक अन्युत्कृष्ट रंगमंचक निर्माणकला विकसित भेल अछि किन्तु ओकर आरंभिक रूप विशाल नहि छलैक। विश्वक प्रत्येक कला ओ संस्कृतिसँ समन्वय स्थापित करय लागल आ एकक कला दोसरक कलासँ प्रतिस्पर्धामे आँगा आयल। डॉ0 भुवनेश्वर महतोक कथन छनि– "एहन एखनो नहि कहल जा सकैछ जे भारतीय रंगमंच पर मात्र पाश्चात्य प्रभाव परिलक्षित होइछ, अपितु भारतीय प्रभाव सेहो अन्य पाश्चात्य रंगमंच पर पड़ल अछि। कोनो कलाक आदान–प्रदान समान रूपसँ नहि होइछ, ओहिमे न्यूनाधिकता आबिये जाइछ।"[3]

बीसम शताब्दीक प्रारंभमे उत्तरी भारतवर्षमे व्यावसायिक पारसी थियेटर कम्पनीक स्थापना भेल जकर प्रभाव मिथिलोपर पड़लैक। एकरे परिणामस्वरूप 1920 ई0मे श्रीपुर (शेकपुर)क उमाकान्त द्वारा नाटक कम्पनीक स्थापना कयल गेल जे कालान्तरमे अत्यधिक लोकप्रियता अर्जित कयलक। एकर देखा–देखी मिथिलामे आरो नाटक कम्पनीक स्थापना भेलैक। एहि कम्पनी सभक द्वारा रंगमंच साधारण एवं भ्रमणशील रहल। एहि कम्पनी द्वारा मैथिलीक कोनो गंभीर नाटकक मंचन नहि कयल गेल। अत्यन्त साधारण नाटककेँ मंचित कय, टाका उपार्जित करब एकर मुख्य उद्‌देश्य छलैक। उमाकान्तक नाटक कम्पनी द्वारा मुंशी रघुनन्दन दासक 'मिथिला नाटक'क मंचन कयल गेल जे उल्लेखनीय अछि। एहि नाटक कम्पनीक प्रवेश राज दरभंगामे भेलैक। मिथिलामे कम्पनीक किछु प्रभाव घटल ताहि सम्बन्धमे नाट्यालोचक डॉ0 प्रेम शंकर सिंहक कथन छनि – "मैथिली रंगमंचक

दिशामे पारसी कंपनी द्वारा कोनो कार्य नहि कयल गेल। वस्तुतः पारसी कंपनी द्वारा किछु एहन कार्य अवश्य कयल गेल जकर फलस्वरूप एकरा प्रति लोककेँ विकर्षण होमय लागल। जतय पहिने रंगमंचक विकासक परम्परामे हमरा अभिनेतासँ परिचय होइत अछि जे स्वेच्छासँ एहिमे भाग लैत छलाह ओतय ओ अत्यधिक व्यावसायिक बनि गेल।"[4]

मैथिली रंगमंचक विकासमे कलकत्ताक महत्तम योगदान एहि तथ्यकेँ पुष्ट करैछ जे प्रवासी मैथिल समुदाय बंगलाक सक्रिय व्यावसायिक रंगमंचक सम्पर्की भेलाह, कारण ओतय जन–रंगमंचक प्रधानता छलैक। एहि क्षेत्रमे कलकत्तास्थ मैथिलकेँ जे सफलता भेटलनि तकर सब श्रेय छैक बंगला–रंगमंचकेँ। बंगला रंमंचकेँ अत्यन्त निकटसँ हुनका सभकेँ देखबाक अवसर भेटलनि। बंगला रंगमंचक सुमुन्नत एवं समृद्धशाली परम्परासँ अतिशय प्रभावित भ' ओतय मैथिल रंगमंचक स्थापना भेल। प्रवासी मैथिल साहित्यकार, नाटककार, अभिनेताक सक्रिय योगदानक फलस्वरूप ओतय अव्यावसायिक रंगमंचक स्वरूप विकसित भेल। एकर परिणाम एतबा अवश्य भेल जे नाट्य–प्रस्तुति फलस्वरूप संपूर्ण मैथिल समुदायक दृष्टिकोण परिवर्तित भ' गेल। एहि प्रकारक अव्यवसायिक रंगमंच सामाजिक विचारधारामे क्रांति अनबामे सहायक सिद्ध भेल जकर फलस्वरूप राजनीतिक एवं धार्मिक समकालीन जीवन प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूपसँ रंगमंचपर प्रस्तुत भेल। नव–नाट्यान्दोलनक अनेक नाट्यकारकेँ प्रेरित कयलक जे आधुनिक युगमे लिखल गेल नाटक अव्यावसायिक रंगमंचक हेतु सर्वथा उपयुक्त अछि।[5]

मैथिली रंगमंच अपन अव्यावसायिक कंकालकेँ प्राण प्रतिष्ठा करौलक अछि। एहि क्षेत्रमे कलकत्तास्थ 'मैथिली रंगमंच' नामक संस्था अभिनव प्रवृत्तिक प्रयोग कयलक। आधुनिक नाट्यकारक प्रवृत्ति पैध–पैध रंग–निर्देश देबाक भ' गेल छनि जाहिमे ओ रंगपीठपर उपस्थिति कयल गेनिहार दृश्य पीठक विस्तृत विवरण दैत अछि, परिणामस्वरूप रंग–व्यवस्थापक हाथ आबद्ध भ' जाइत छैक। आधुनिक मैथिली नाटक जाहियासँ अपन संबंध रंगमंचसँ स्थापित कयलक अछि तहियेसँ आधुनिक संगीतक समावेश मैथिली नाटकमे अपन स्थान बना लेलक अछि।

सम्प्रति मैथिली नाटकमे नृत्य आ गीतक प्रचलन मृतप्राय भ' गेल अछि। एहि सबन्धमे प्रसिद्ध नाट्यकर्मी सुधांशु 'शेखर' चौधरीक कथन छनि– "नृत्य आ गीत रूपकक अनिवार्य अंग जहिया कहियो मानल जाइत रहल होअय वर्तमान कालमे ई दुनू वस्तु नाटकसँ सर्वथा बहिष्कृत क' देल अछि। अर्धविकसित किंवा अविकसितो मंचक हेतु जे नाटक लिखल जा रहल अछि ताहिमे दुनूक सर्वथा अभाव लक्षित होइत अछि। ई भिन्न कथा जे चलैत नाटकक प्रवाककेँ रोकि पर्दा उठाब' खसाब' बला मंचपर स्वाद बदलबा लेल बलात् नृत्य–गीत ठूसि देबाक लेल ओखन ग्राम्य क्षेत्र वा अविकसित इलाकामे प्रचलित अछिये किन्तु ध्यान रखबाक थिक जे ई स्थिति मात्र कला ओ शिल्पक क्षेत्रमे पछुआयल रहबाक सूचना दैत अछि आ ई प्रदर्शित करैत अछि जे कलाक सूक्ष्मताकेँ ग्रहण करबाक मानसिकता ओहि क्षेत्रकेँ एखने धरि उपलब्ध नहि भेलैक। अछि।"[6] आधुनिक युगमे नाट्यकारकेँ यथार्थवादसँ अत्यधिक प्रेरणा भेटलनि जकर परिणामस्वरूप रंगमंचपर दृश्य संयोजनक सूक्ष्मताकेँ सहायता कयलक अछि। रंगमंचपर एक विशेष वातावरणक निर्माण करबाक हेतु रूप–सज्जा समर्थ प्रवृत्ति अछि। एकरा माध्यमे प्रयोक्ताकेँ उद्देश्य रहैछ प्रेक्षककेँ पात्रक प्रतीति करायब तथ्य नाटकक व्याख्या करब। डॉ0 प्रेम शंकर सिंह रूप–सज्जाक कलात्मक सौन्दर्यक अभिवृद्धिक लेल रंग–विज्ञानक महत्ताकेँ स्वीकार कयलनि अछि– "रूप सज्जा–कला पूर्णतः रंग विज्ञान पर निर्भर करैछ। रंगक विशेष मूल्यवत्ता घनता एवं मिश्रण पद्धति एवं ओकर व्यवहारिक प्रयोग रूप सज्जामे व्यक्तिक कायाकल्प क' दैछ।"[7]

निष्कर्षतः आधुनिक मैथिली नाटकक अनुशीलन कयलापर ई तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे नाट्यकार आधुनिक मैथिली नाटककेँ रंगमंचीय प्रवृत्तिक दृष्टिसँ सजयबाक चेष्टा कयलनि अछि। जतय स्वतंत्रतासँ पूर्व मैथिली नाटकमे रंगमंचीय प्रवृत्तिक अभाव छल ततय आधुनिक मैथिली नाट्यकार रंगमंचीय प्रवृत्तिकेँ ध्यानमे राखि मैथिली नाटकक रचना करबाक दिशामे उन्मुख भेलाह अछि। आधुनिक मैथिली नाटकक रंगमंचीय प्रवृत्तिपर पाश्चात्य प्रवृत्तिक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि। भारतक अन्यान्य भाग रंगमंचीय प्रवृत्तिक दृष्टिसँ बहुत आँगा बढ़ि गेल अछि। एकरा ध्यानमे राखि मैथिलीक नाट्यकार लोकनि रंगमंचीय प्रवृत्तिकेँ आगाँ बढ़यबाक दिशामे अथक प्रयास क' रहल छथि, से प्रशंसनीय अछि। ई कहल जा सकैछ जे मैथिली नाटकपर जे नव–नव प्रवृत्तिक प्रादुर्भाव भेल जे भारतक परम्परागत रंगमंचीय प्रवृत्ति पाश्चात्य आधुनिक रंगमंचीय प्रवृत्तिक प्रभावमे आबि विभिन्न रूपेँ अपन चरण दिश अग्रसर भ' रहल अछि। रंगमचीय प्रवृत्तिक विभिन्न क्षेत्र यथा– रंग–निर्देशन, अभिकल्पना, संगीत, नृत्य, दृश्य–संयोजन, ध्वनि–संयोजन, आलोक–संपात, वेश–भूषा, रूप–सज्जा, मंच–सज्जा, नारीक पात्रक अभ्युदय इत्यादिक क्षेत्रमे विशेषज्ञ लोकनि आन पृथक कुशल निर्देश दए रंगमंचीय प्रवृत्तिकेँ चरमोत्कर्ष धरि पहुँचा देलनि अछि किन्तु मैथिली रंगमंचीय प्रवृत्ति ओतेक परिस्कृत नहि भ' सकल अछि, जतेक अन्य भाषाक रंगमंचीय प्रवृत्ति। तकर कारण अछि जे मैथिलीक विभिन्न नाट्य संस्थ आर्थिक विपन्नताक संकटसँ ग्रसित रहल अछि जकर फलस्वरूप रंगमंचीय प्रवृत्ति ओतेक विकसित नहि भ' सकल अछि।

संदर्भ :

1. रंगमंच : सिद्धान्त और व्यवहार– डॉ0 अज्ञात हिमालय, पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, दिल्ली, 1974, पृष्ठ– 61
2. आन दी आर्ट ऑफ थियेटर– एडवर्ड जोर्डन क्रेग, हेनीमेन, लंदन, 1957, पृष्ठ– 25
3. हिन्दी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन– डॉ0 भुवनेश्वर महतो, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 106/54 गाँधी नगर, कानपुर, 1980 पृ0– 63–64
4. मैथिली नाटक ओ रंगमंच– डॉ0 प्रेम शंकर सिंह, पृ0– 177
5. तत्रैव, पृ0– 187
6. संदर्भ– सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृ0– 2–3
7. मैथिली नाटक ओ रंगमंच– डॉ0 प्रेम शंकर सिंह, पृ0– 251